पाठ 6: केवल मसीह में ही भरोसा
शास्त्र गीत: सदा आनन्दित रहो - 1 थिस्सलुनीकियों 5:16–18; फिलिप्पियों 4:6

क. **कुत्तों से सावधान**

1. फिलिप्पियों 3:1 को पढ़ते समय आपको कैसा प्रभाव या भावना प्राप्त होती है?
2. फिलिप्पियों 3:2 वे "कुत्ते" कौन थे जिनसे फिलिप्पी के मसीहियों को सावधान रहने की आवश्यकता थी?
3. क्या "कुत्ते," "कुकर्मी," और "खतना कराने वाले" तीन अलग-अलग समूह थे, या एक ही समूह के तीन वर्णन हैं?
4. सुसमाचार के ये शत्रु क्या शिक्षा दे रहे थे?
5. क्या सुसमाचार के यही शत्रु आज भी सक्रिय हैं?
6. फिलिप्पियों 3:3 परमेश्वर की आराधना करना, यीशु मसीह में आनन्दित रहना, और शरीर पर कोई भरोसा न रखना—ये सब सुसमाचार के शत्रुओं के विरुद्ध हमारा सबसे अच्छा बचाव क्यों हैं?

ख. **अपनी उपलब्धियों पर नहीं, बल्कि पूरी तरह मसीह पर भरोसा करना**

1. फिलिप्पियों 3:4–6 मानवीय दृष्टिकोण से शाऊल (जिसे बाद में पौलुस कहा गया) के पास घमण्ड करने के कौन-से कारण थे? (प्रेरितों के काम 22:3; 26:4–5 भी देखें)
2. मसीह से मिलने से पहले पौलुस का यह दावा—कि व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में वह निर्दोष था—इसके बारे में आपके क्या विचार हैं?
3. यीशु का अनुयायी बनने से पहले पौलुस (शाऊल) मसीहियों को सताने में उत्साहित था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया को सताने के पौलुस के कौन-से उदाहरण हमें मिलते हैं? प्रेरितों के काम 7:57–8:3; 9:1–2
4. यीशु का अनुयायी बनने से पहले मसीहियों को सताने के विषय में पौलुस की स्वयं की गवाही क्या थी? प्रेरितों के काम 26:9–11
5. यह कैसे सम्भव था कि शाऊल को लगता था कि वह यीशु के अनुयायियों को सताकर परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहा है? यूहन्ना 16:1-2 में लिखी यीशु की भविष्यवाणी पर ध्यान दें।
6. यीशु का अनुयायी बनने के बाद पौलुस का अपनी पिछली धार्मिक उपलब्धियों के प्रति दृष्टिकोण कैसे बदल गया? फिलिप्पियों 3:7–11; 1 तीमुथियुस 1:15
7. "मसीह में पाया जाना" का क्या अर्थ है? 1 कुरिन्थियों 1:26–31; इफिसियों 1:7–14
8. आपको कब यह समझ में आया कि उद्धार की आपकी एकमात्र आशा यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा ही है?

ग. **निशाने की ओर बढ़ते रहना**

1. फिलिप्पियों 3:12–14 प्रेरित पौलुस का निशाना क्या था (या कौन था) जिसकी ओर वह दौड़ रहा था? (फिलिप्पियों 3:10–11 भी देखें)
2. पृथ्वी पर अपने जीवन के अंत में पौलुस की क्या स्वीकारोक्ति थी? 2 तीमुथियुस 4:7–8
3. हम अपनी दृष्टि और ध्यान यीशु पर कैसे बनाए रख सकते हैं? इब्रानियों 12:1–2
4. किसने आपकी यीशु पर अपनी दृष्टि स्थिर रखने में सहायता की है? (पवित्र आत्मा, आध्यात्मिक मित्र आदि)